यह प्रश्न-पत्र एवं उत्तर पुस्तिका संयुक्त है।

जय गुरु नाना | जय महावीर | जय गुरु राम

श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, बीकानेर

जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा-2020

समय : 3 घण्टे
12:30 से 3:30 बजे तक

प्रश्न-उत्तर पत्र भाग - 8

अंक 97+3-100

नाम..... पिता/पति का नाम.....

शहर का नाम..... जन्मतिथि..... मोबाइल..... रोल नं .....

नोटः-सभी प्रश्नों के उत्तर दिये गये निर्देशों के अनुसार, निर्धारित स्थान पर, इसी प्रश्न पत्र में लिखें। उत्तर पुस्तिका जाँचने पर यदि यह पुष्टि होती है कि परीक्षार्थी ने दूसरे का सहयोग लिया है अथवा एकाधिक पुस्तिकाओं के उत्तर समान हैं तो उसे नकल किया हुआ मानकर परिणाम निरस्त कर दिया जावेगा। केन्द्र अधीक्षक उपरोक्त प्रश्नोत्तर पुस्तिका परीक्षा समाप्ति के अगले दिन श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) के पते पर भिजवावें।

पेपर 97 अंक एवं 3 अंक सामायिक के हैं। जैसे :- 3 सामायिक करने पर 3 अंक दिए जाएगे और 2 करने पर 2 अंक इसी क्रम में सामायिक न करने पर 3 अंक काटे जाएंगे।

1. समता संस्कार पाठशाला के विद्यार्थी हों तो (✓) सही या (✗) गलत करें। ( )

2. आपने कितनी सामायिक की है 1,2,3 काँलम में लिखें। ( )

प्रश्न 1. गाथा पूर्ण कीजिए **30**

1. तप .....
..... जहान है।

2. जीव .....
..... उजाला।।

3. निज .....
..... सिद्धि।।

4. ममता .....
.....दुःखी होता।।

5. काम .....
..... खान।।

6. सुघोसे णयरो .....

..... कुमारे।।

7. जाति .....

..... धारी

8. भाव .....

..... मेहमान है।

9. उवागच्छइ .....

.....

..... संथरई।

10. तृण मैदिनी .....

..... कही।

11. एवं खलु जंबू.....

..... समिद्धे।

12. णमो सुद्धेवाए .....

..... सुहविवागो य।

13. निज .....

..... उपकार के।

14. कणगपुरं णयरं .....

..... जुबराया।

15. हमने किए .....

..... अंग है।

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिएः– **12**

1. समिति–गुप्तियों से युक्त अणगार भगवंतो की जागरणा ..... है।

2. श्रीमद् भगवती सूत्र के शतक..... उद्देशक ..... में मुनि बनने के पहले स्कन्दक हेतु परिषह शब्द का उल्लेख हुआ है।

3. ..... हैजा आदि का उपद्रव नहीं होवे।

4. दान ..... धातु से बना है जिसका अर्थ है देना।

5. राजगृह में कुछ विदेशी व्यापारी ..... लेकर आये।

6. 11 से 14 गुण. में ..... चारित्र होता है।

7. 5वें गुणस्थान वाले से 2रे गुणस्थान वाले ..... है।

8. ..... के राजमहलों में जो बालक पल रहा था उसका नाम रखा गया –नमि।

9. ..... प्रतिमा में उपासक दूसरे के द्वारा आरंभ कराने का त्याग कर देता है।

10. 11 मास की प्रव्रज्या वाला साधु ..... के देव के तेज का उल्लंघन कर जाता है।

11. पुद्गल का ..... के रूप में रहना शुद्ध स्वभाव धर्म है।

12. कर्मग्रन्थ के मत से अनन्तानुबंधी की उपशमक करके भी ..... में आरोहण संभव है।

प्रश्न 3. नीचे लिखे पाठो का भावार्थ लिखिएः– **10**

1. चम्पा णयरी। पुण्णभद्दे उज्जाणे। पुण्णभद्दो जक्खे। दत्ते राया। रत्तवई देवी, महचंदे कुमारे जुवराया। सिरिकन्ता पामोक्खाणं पंचसया जाव पुव्वभवपुच्छा। तिगिच्छया णयरी। जियसत्तू – राया। धम्मवीरिए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2. विजयपुरे णयरे। णन्दणवणे उज्जाणे। असोगो जक्खो। वासवदत्ते राया। कण्हसिरीदेवी। सुवासवे कुमारे। भद्दापामोक्खाणं पंचसया जाव पुव्वभवपुच्छा कोसंबी णयरी। धणपालो राया। वेसमणभद्द अणगारे पडिलाभिए। इहं उववण्णे। जाव सिद्धे।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3. एवं खलु जम्बू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।

.....

.....

.....

.....

4. एवं खलु जबू तेणं कालेणं तेणं समएणं उसभपुरे णयरे। थूभकरंडग उज्जाणं। धण्णो जक्खो। धणवहो राया। सरस्सई देवी।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5. सामीसमोसरि, पुव्वभवपुच्छा। उसुयारे णयरे। उसभदत्ते गाहावई। पुप्फदंते अणगारे पडिलाभिए। माणुस्साउए णिबद्धे। इह उववण्णे जाव महाविदेह वासे सिज्झिहिइ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 4. सही या गलतः– **15**

1. जब श्रावक 12 व्रत अंगीकार करता है तब उसकी अहिंसा पौने उन्नीस विस्वा हो जाती है। ( )
2. 12वें गुण में 8 कर्मों का उदय होता है ( )
3. 24 तीर्थंकर दीक्षा के पूर्व 2 वर्ष तक लगातार दान देते है। ( )
4. छः काया के जीवों को अभयदान साधुत्व का प्रथम चरण है। ( )
5. अबाधाकाल पूर्ण होने पर कर्म का फल देना उदय कहलाता है। ( )
6. दान विवेकपूर्वक एवं शुभ भावों से दिया जाना चाहिए। ( )

7. भगवान के चारों और एक-एक योजन तक मद-मद शीतल सुगन्धित वायु नहीं आती है जिससे सब अशुचि वस्तुएँ दूर होती है। ( )

8. आकाश में तीस छात्र घूमते है। ( )

9. जैन धर्म का आधार दान ही है। ( )

10. बाईसवां परिषह दर्शन मोहनीय के उदय से होता है। ( )

11. 8वें 9वें गुणस्थान में दर्शन मोहनीय कर्म का उदय होता है। ( )

12. श्रमण जीवन एवं श्रावक जीवन का मूल दान है। ( )

13. तीसरे गुणस्थान की अपेक्षा चौथे की स्थिति असंख्यात गुणा अधिक हैं। ( )

14. 1,2,4 गुणस्थान अमर गुणस्थान है। ( )

15. 14वें गुणस्थान में परम शुक्ल लेश्या है। ( )

प्रश्न 5. निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखिए:- **20**

1. ब्रह्मचर्य प्रतिमा की अवधि कितनी है?

.....

2. जीवस्थान के चौदह प्रकार किस सूत्र में बताये गए है?

.....

3. शालीभद्र-संगमक का जीव किसके गर्भ में उत्पन्न हुआ?

.....

4. कैसा मनुष्य अंधा होता है?

.....

5. तीर्थंकर भगवान जहाँ विहार करते है, वहाँ की जमीन केसी होती है?

.....

6. 4थे गुणस्थान का अंतर लिखिए?

.....

7. 12 माह की प्रवज्या वाला साधु कौन से देवलोक के देवों के तेज का उल्लंघन कर जाता है?

.....

8. सुदक्खु जागरणा किसे कहते है?

.....

9. आहार धर्म के मूल भेद कितने है? नाम लिखिए ?

.....

.....

10. श्रीमत् समवायांग सूत्र में भिक्षाचर्या के स्थान पर किस शब्द का प्रयोग हुआ है?

.....

11. निर्विचिकित्सा का अर्थ क्या है?

.....

12. पाँच विस्वा दया के कौन से दो भेद करे?

.....

13. मोक्ष का मूल संयम का थोकड़ा किस सूत्र के आधार पर चलता है?

.....

14. आरंभ त्याग प्रतिमा की जघन्य काल अवधि कितनी है?

.....

15. किसके उदय से जीव एकदेश संयम भी पालना नहीं कर सकता है?

.....

16. कौन से सम्यक्त्व में मोहनीय के विपाकोदय की नियमा होती है?

.....

17. किस गुणस्थान में कषाय के सूक्ष्म खण्डों का ही उदय होता है?

.....

18. सिद्ध भगवान में कौन-कौन सी आत्मा होती है?

.....

19. पहले गुणस्थान में कौन-कौन से हेतु नहीं होते है?

.....

20. 9वें गुणस्थान की मार्गणा बताइए?

.....

.....

प्रश्न 6. सही जोड़ी बनाईये (अ) (ब) (स) को मिलाकर (द) में लिखिए। **10**

(अ)	(ब)	(स)	(द)
1. रत्तासोगे उज्जाणे	वीरपुरं णयरं	कणगपुरं णयरं	.....
2. देवरमणे उज्जाणे	महचंदे कुमारे	अज्जुणो राया	.....
3. मणोरमे उज्जाणे	महापुरं णयरं	मित्ते राया	.....
4. सोगंधिया णयरी	सुभद्धा देवी	बले राया	.....
5. सोयासोए उज्जाणे	सुहोसे णयरे	णीलासोगे उज्जाणे	.....